

वत्तं परं यत्तु नाना ॥ न न माने न न्नि ए च मा ॥ श्री मा
दिः वा कः ॥ श्री न न मा पि तुः प्रे त्व सु यं च लु वं ला ॥
फल प्रा प्थं स मा वृ ना च न क लु श्री सु श्री य अ चं
न मः ॥ प्र षां २ ॥ शु भं मं स्वारा दि न्ना सा ल म मा लं ॥
ता स मा वे मि त क ल स म ज ये त ॥ सी वे ॥ ॐ न न कुं
निं तु लु मा य २ ॥ आ ग ॥ ॐ कुं कुं मं कुं मं सु र न वं य

नमो ॥ ॐ सोऽधुमकुं भद्रा यु र्दयः २ वा यु वं ॥ ॐ नमो
कुं भद्रा पिदा यः ॥ ईसा नेः ॥ ॐ अलकुं भद्रा पिदा यः
इतीदि पृथः ॥ ते पुपदा र्धा दिव्य प दिव्य भद्र गं चादि
ततः सन्ना परिलक्ष्मी नारायण न पृथ न मत् ॥ ॐ आचारस
द्विदिक् मला सना यन मः ॥ पुष्पैकं च न्नां च्चा यत् ॥ वि
मुल्लं न्नी भद्र हं लक्ष्मी नामां गं संस्तुतं ॥

प्रविभक्त विभूनां मन्त्री व द्वा कित न द्वा संः ३ रसा को सानं वी
भुवि तवत्तं गगत्तु भुः ॥ संस्तु न्नां गं द्वा प व्ना रुस्त प द्वा
विचारणः पुष्पैकं कल स प द्वाः मुकुलं नाम रुस्त केः ॥ तं द्वा
कृमा स मा रु धां लाक्ष्मी नारायण न मत् ॥ ॐ नमो लक्ष्मी
नाय न य न म ॥ इती मन्त्रे णं पा यः रुद्रा र्ध स्नानं पंचा म्ना
आदः ॥ ॐ नमो नं पुष्पां च्चा यत् ॥ ॐ नमो लक्ष्मी
गं आ व र्णा पृथ ॥ ॐ नमो लक्ष्मी

पुल्लगोपनेसिलो कम् ॥
माविषालकुलुर्वचस्थान
पामिसमाकुली॥देवता
पुननाथयिप्राथयामि
वजस्पये॥१॥दुसैमा
टिकोलाइरिनोसिलोक
आयुद्रोनासिपेसिरे
अदसरथेसत्रुर्थयि
यायेओस्यर्पल्युके
गामिअपवनेमान्चदु
जोयनेसुयोस्सीग
वनेहर्लचमुसयेस
गिअकुंसेसुयेवीशा
नेवीदुरिअवगोअव

गिकोरोअनारायने
॥१॥जयंसेरिअलाका
लोअर्द्रकालोकेपाली
निदुर्गाअमासिवाया
त्रिस्त्राहाअयानमस्तु
नेसिलोक॥१॥सिआसंकल्प
सरअद्यादिगोत्रेगिनु
र्पद्रजापगिदेवगाकी
माषिशानोस्त्ररदेवगा
कीववर्नसमुद्रदेवगा
कंहरिद्वेसपतीदेवगा
क्युगिगोमोसुजअदे
वगाकीनानासाका

निवीश्रुदेव नार्क श्रु
कजोत्रे श्रुमुक नाक्ये
काइक वावीक भा-न
सिकसि सगि किंदि
सक लप श्रुय वपरा
सुष भोजे लपा नवीव
जोतई मागि अश्रु क
ना मश्री ह्य ने ओमि व
मई सप्र वदे ॥ १ ॥
आदि ये को जा प ॥
होई ह्यु आदि पा
य न मा ॥ १ ॥ सो व को
अ प ॥ साहि सों सुगि
सो मा य न मा ॥ १ ॥

ग ल को जा प ॥ १ ॥ की की
कों वी श्रु मा रा म न मा
वु व को जा प ॥ १ ॥ दी दी
वो वी वु व्या य न मा ॥
वो वी स्व गि को जा प ॥
श्री जी श्री श्री श्री स्व गे
न मा ॥ १ ॥ को जा
प ॥ १ ॥ श्री श्री श्री श्री
क्रा य न मा ॥ १ ॥ नी
अ र को जा प ॥ १ ॥ सी सी
सी सी सी सी सी सी सी
वो ॥ १ ॥ ए ह को जा प ॥ १ ॥
भी ओ ओ ओ ओ ओ ओ
न मा ॥ १ ॥ के वी ॥ १ ॥ को जा

पा। क्रौं प्रीं प्रे० पुं०
कनवेनमम इ नो०
एवग्रह को माप सं
विषयने अग्रम ॥ १०

श्री गणेशाय नमः ॥ सर्वार्थाय ॥ मथ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय

शुद्धिनिष्ठे ॥ नमो देवोदप्रवाल ॥ ताम्रपात्रे च
वनाक्षतकसुपं नमः ॥ पुनः मुखेन श्रीसुमार्चिका
रयत् ॥ ॥ ॥ ॥ गच्छति ॥ गोत्रमुच्यते ॥ ॥ पितृदेवसु
साम्बद्धिरिकशुद्धिकर्तुं श्रीसुमार्चिका च नमः ॥
॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो नानाशोभनसुमार्चिका

कृतमुच्यते ॥ गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
नामधेयं नमः ॥ विश्वेदेव पुनः मुखे स्थित्वा ॥ विश्वे
श्वेदेवे नमः ॥ नमः ॥ इदं प्राशनं नमः ॥ पुनः मुखे
वाक्का विश्वेदेवे नमः ॥ प्राज्ञा च नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
प्राज्ञा च नमः ॥ विप्रप्राज्ञा करुणा श्रीगणेशाय नमः ॥

: करः स कर कर वि डे यः से क क मे कर करः ॥ १ ॥
पक्ष लक्ष्मी अ पक्ष माय करये यो

पा-विद्या लला उ तलाः सुखं प्र प सु मे न ॥ वाक् ॥ पितर
अथाना म न तिलो द जा दा धनं श्रु धी पितामह
अथाना म तिलो द का र्थ स्य ॥ प्र पितामह अथाना म न
तिलो द का र्थ स्य ॥ ॥ प्र कलं क पि ला दा वे का ति
ये मो सु दे योः ॥ त कल पा दा व श्वेषु वि प्रा ना पा द

मै वि न रि के च र आ आ अः ॥ श्रु धी ने दि का ग ता ॥ क ता
द द र ता मि सु ख ॥ ॥ वि श्वो दे व पु त्रानु मि सु ख ॥
आ च मन ॥ वाक् ॥ वि श्वो दे व मो वे श्वान र दे वे
भ्यो ई द मा स न न मः प्र सु न मः ॥ वाक् ॥ पित पित
मह प्र पितामह स्तै भ्यो ई द मा स न न मः ॥ पित प्र
प्र स र्वा ॥ पितामह सु प्र स र्वा ॥ प्र पितामह प्र स र्वा
याः अथि ती स न का र्थ प्र प्र स र्वा ॥

मो स ना

नं रि के च र आ आ अः
मा स न न मः ॥ प्र सु न मः ॥

॥ नमो ॥ गजो बरु य अस्ता य फल ॥ गदा धरु य हया य
रे व सिर से स्व हा ॥ नम चा ने सिखा ये ने य ॥ अस्ता प्र
मंदल पुत्रा ॥ वसिष्ठ नमः विष्णु वे नमः ॥ तदा नमः
ईश्वर य नमः सदा सिवा य नमः ॥ ॥ कुसुद य नमः सो धनः
ॐ वसिष्ठो नमः इत्यादिना पुत्र न ॥ आत्म सि च ये त
आ त म ने च द न न म आ त म सिर से पु स न म अ त मा स न मे
आ त मा सु त य न ॥ ॥ ॐ कालि मु खे न पु त्स्व मा त्र नः ॥

ॐ सर्वं जगत् सारं रं मि गा वारं अरे गि रं ॥ चक्रं वा का स
रु धी पे रु लाः सर सि मा न से ॥ ते भी मा ता क रु धी ने वा म न
वे द पार गाः ॥ पु स्ति ता पु र म ध्या न यु ये ते श्री वा सि द थ ॥
मा धु मु मि ग मा ध्या त्वा ध्या त्वा दे वं ग दाः ॥ वा मां चै व न म
स्कारे त त धा द्य पु र्व त ते ॥ ग मा य न म ग दा धर य न मः पु द रि क
दा य न मः ॥ भू मि प्रो दा य त कु सु श ले न ॥ अ म वि धो प वि धो

विश्वेन यातस्तान विभः ॥ कालाय नमः ॥ कांताय
अपसम पितृ पक्ष्मा विभः ॥ अष्टवसु पुष्प स्वधाः
इन्द्रादस रुडे पुष्प स्वधा ॥ द्वादसादि पुष्प स्वधा ॥
॥ समन ॥ गव्यं वरुणाय पुष्प स्वधा ॥ अपसम न पुष्प
आननय ॥ अथादिवाक् ॥ कर्तुं सत्किं यादस काल

पुष्प सरिर भूमि वासराणां सुसन्निवि नमस्तुः पितृ
तां मरु पुदिता महा नासु सन्निवि नमस्तुः त्वा ह्य आनिभ
गं न प्रवृत्तने ॥ विश्वे देवादि पूर्व कं पुष्प मद्वा शाम
हं करिष्येः वासराणो कुरुष्व ॥ ॥ समन ॥ कुरु साक्षता स
नैर्वृत्ताः ॥ विश्वे देव पात्रान नमस्तु ऐवं वै श्वो न राय

अधीभौकपुयः कुसुमोऽलं पहायः अपवित्री
: अधीथासुकेः विश्वेदेवपात्री तानवे श्वानरदेवा
त्रां तानं नमः ॥ कुसुमस्तनयः ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो
वैश्वानरदेवेभ्योः पवीत्रकं ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो वैश्व
नरदे पौत्रैर्यज्ञलमिदं नमः ॥ एवं अक्षतं नमः २ ॥ एवं ॥

चदनाक्षतपुष्पनमः ॥ वृषं २ ॥ त्राकिलं स्वकाया
अधीपुयकांतय ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो वैश्वानरदेवे
भ्यो एसोदकुपात्रं परिपूरणं नमस्तुः नेपात्ताहानि
तीकपुय ॥ वं ॥ पात्रावा स्रष्टा स्रष्टु ॥ केतने ॥
केतं स्वजीना अधीसृष्टि कात्रा स्रष्टा केतने
विश्वेभ्यो देवेभ्यो वैश्वानरदेवेभ्यो इदमावाह इति

महा वज्राः ॐ ह्रीं नमो भगवते ॥
 अथ विष्णवे नमः ॥
 ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कुरुत यः ॥ पितृ पितृ मह प्रपिता मह पात्र पवित्र
 स्वधी ॥ पितृ ३ पात्रे इदं जलं स्वधी ग्राह्यं मोक्षाय ॥
 पितृ ३ पात्रं नित्यं मिदं स्वधीः पात्रे च दनं स्वधी
 धुप स्वधी ॥ ॐ ॥ पितृ यथा नम्रे पितृ मह य
 थाना मनेः प्रपिता मह यथा नमने अर्धे चर्चका

पात्रं परीक्षुर्ण ॥ पितृ ३ पात्रं गिरि का ह्यस्या स
 आवाहनं ॥ वा ॥ पितृ ३ ~~पात्रं~~ पात्रं इमा वा
 हयिष्ये आवाहयः ॥ स्वां तयः ॥ पितृ ३ पात्रं पुष्पं
 स्वधी ॥ कुरुते ॥ पितृ ३ पात्रो शानं ॥ पितृ ३ पात्रं
 चाल दनं स्वधी ॥ पितृ ३ पात्रं पवित्रं कं स्वधी
 ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ मिताः पञ्चिमे देवयानः ॥ अमिता यमा सवमापदं

लोचिन्मनंतं न तस्मात् ॥ अथ ह नमस्तुभ्यं ॥ स व द क ॥ म न ह ग ॥

पितृ ३ पात्र पुष्प स्वर्ग ॥ वाक्म ॥ पितृ यथा नाम
पितामह यथा मातुः पितामह यथा मातुः
द्वयं हस्तं चैव स्वर्ग ॥ अथैव प्रविष्टं स्वर्ग ॥ पात्र सलं
पात्रो द्वयेन सुगन्धनात्तत्र नमः सि पात्र अमुक्ष
नमः सि पात्रोऽथ नमः सि ॥ लाहा सि ज ॥ च प्रति

के ॥ पितृ पितामह पात्र स्ते वात्सरा ^{च दन} स्वर्ग ॥
जज्जन्मानविये ॥ न ह्यो पवि त कृष्ण नमः
धुम ताते ॥ अत्र गं श्रीं पं दी पयो ज्ञोप
वित कृष्ण गोविधानं तत्सर्वं परिपूरयामे
त्तु ॥ गदा चरायं ईदमा वाह ईधा आवाह

यामि नमः ॥ एवं पादाद्यैरुस्तौ च हन न वृष
दिप अत्र गच्छादि ॥ अतिथि सन कादिना
ईमावाह ईषा ॥ एवं हस्तार्च ॥ चंदन यो
मोपवित्तकृष्ण धूपं दिपंदिना नदि कश्चरा
वाय य ईमावाह ईषा आवाह यामि २ ॥

एवं हस्तार्च चंदन यज्ञोपवित्तं धूपं दि
पादि ॥ ओं संकल्पं ॥ वाक्का ॥ विष्णवे नमो
वे नमो यथादियमान ईदु अंतसं कल्पसि
द्विरस्तु ॥ अपसम ॥ पितृपितामह पुपिता
मह सौमित्रा ह्यारणा यथा दास्यमाना ईदुमं
अंतसं कल्पसि द्विरस्तु

कमुनादोवगरी हेमना खोला प्रसा
सकादगरी प्रसा के फ ५४ या गरी दीप
२५

ASHA ARCHIVES
3737

गदाचरायार्थं वासना नाईदं न संकल्पमिति
द्विरसुः॥ एवं अति ठि न नदिके श्वे र आ च अति
दि ॥ मंदल दय के स्वा कि ज्वल यः ल व कि
ज्ज का या हा य के ॥ अथ ॥ वा का ॥ का स्प प जा

न पितरु दे स सा व ल्द रि न म्ना धा ॥ वि श्वे द
वा दि पु र्व के अं द स क ल्पे सि द्विरसुः ॥ सु श्रा
ई म सु त ल्प र्वे प री पु न म सुः का ला ति ल वे ल्प
ति त त त सं वृ नि दे दि म सु य स्मे दि षं त स्म अ
क्ष य म सुः अ हो रा त्र अ स्म त दि त रः स त्र

अत्र गंधादि ॥ लं षट् २ तयः अदसं कल्प
अक्षी डमस्तु ॥ ॥ अदसं कल्प पुत्रा वि ध्यान
तत्सर्वं परि पुन मस्तु ॥ न व व न वि उ व ल
इदं मो मोती न मो दे व अ प्र चि त्सु अ मो
ति ॥

अपसवे कुरु व पु यः ॥ अ यो च म म थुरा
मा या क्ता सि क्ता वी अ वं ती क्ता वि पु रि चारा
व ती न या स प्र ता मो दे दा य का ॥ लं ष न हा य
पु रि स प त प रि नारा गि आ व का ले ष मा न ला
॥ अ मि लि प म ज ले रु से ॥ पितृ ना मो दा दा य
का ॥

पिस्तासनतयः विजलापरासनउपतिष्ठता
पितृपिस्तासनस्वधाः॥पितामहपिस्तासन
स्वधापु।पितामहपिस्तासनस्वधाः॥पिस्ता
त्रासनं च॥चंपलासपंचामलादितिलकुस
निधाया

पात्रांगहिवापुर्ध्वभीमलोभ्रत्वापठेत्॥
अननमृकसागुनिक्षरसंपिःसमावृतं॥
दधिपंधुइतिसंयुक्तंअक्षतंअक्ष्मांगंदि
स्तासनं च॥विज्वतने॥जयायैशाग्रदाधराय
२॥पुंडरिकाक्षायसायत्रमानवाय॥

पिण्डावासा मरुकरिष्या॥ ब्राह्मनं धाय॥ कु
रुष्वः॥ बाले॥ अपसव्यः विकल्पे एषु का
याः॥ अनादंताश्च ये बाला ये च गभा प्र
दिदिताः॥ तेषां पिण्डे मया दत्तं अक्षथो
मुपतिष्ठुतं॥ संस्कारहि न बाला विकल्प

पिण्डे तिलादवा चैव पता सुः॥ अथ
य॥ चंदनं यज्ञोपविता कपुः सुफलः
गंधं पदिः॥ इदं फलं साधु पदिप नैः
ये आदि संकल्प सिद्धिरस्ति॥ लासादाय
॥ अग्निदग्धाश्च यज्ञि जां ये च कर्मा कुले
मम

शुभोदतेन तत्पुत्रं तत्पुत्रायाति पुरा गतिः
लाहासि ये ॥ नु सुलाकायः ॥ लासकस्य
थि यः ॥ वि ~~का~~ सुनुरध्वं ॥ अपसव्य कोपे ला
सलंषकाय ॥ पितृपि एत भागं स्वधा ॥

पितामहपि एत भागं स्वधा ॥ पुपिताः
महपितामहपि एत भागं स्वधा ॥ पितृ
दयके ॥ अथादिवाक्त्राः पितृयथा नामने
यतत्पि एत तस्मै स्वधा ॥ अस्तवस्तुपि एत तस्मै स्वधा
॥ पितृमहयथानामस्ते यतत्पि एत तस्मै स्वधा ॥

रक्तादस रुद्रादि एउ पृष्ण स्वधां॥ पुदितामरु
 अथानाममूर्तेरुतदि एउ तस्मै स्वधः॥ वादसादि
 तदि एउ पुष्ण स्वधा॥ लाहसि यः॥ दिदभागय
 मः॥ पितृदि एउ भागं स्वधां॥ पितामरु दि एउ भा
 गं स्वधा॥ पुदितामरु दि एउ भागं स्वधा॥ सांतं यः

अससुगंधं मुसुपुस्वधां॥ वादसादि पुसुपुस्वधा
 रक्तादसादि पुष्ण स्वधा॥ नातो न्मे॥ वा न्मे॥
 पितृपितामरु पुदितामरु दि एउ तिलोर्ध्व स्वधा
 पितृपितामरु पुदितामरु दि एउ मूर्धोप वि ^{द्वे} तैर्ध्व स्व
 धा॥ पितृपितामरु पुदितामरु दि एउ चंद्रन स्वधा
 धा॥ सातय॥ तुलसि सत पत्रं च चिग्रागं चं चं तं कं

तत्करं भा रतं चैव पितृना मोक्ष दायकाः ॥ फलं च
॥ ग्नाग्न च धूप दिप ॥ किं ग्व लक्षका माः ॥ पिंद
उयकां वलीते ॥ ईदं फल पुष्प धूप दिप नैव
आदि संकल्प सिद्धि रसु स्वधाः ॥ प्रदल दय के ॥
लषा किं ग्व का आ हा य के ॥ अया दि ॥ पा न

पिंदराता नार्च न पिण्ड पुदानेषु यथोक्त फलस
प्रति रसु ॥ दाता र ओ ~~नार्च~~ र ता र संतां न अ हि दम
मस्तु ॥ ^{किं या पु रि पु न मस्तु} का ला ति त नै ला ति त संव नि दोष मस्तु ॥
यस्या दिषू तस्य अथ य मस्तु ॥ अ हो रात्र अस्म तः
पित रसुः ॥ सर्वे माय सां तने ॥ वि श्वे मा दे व्ये ओ

ॐ स्वानरुदेव्यो भागाः पुष्पानमः ॥ अथ सन्मः ॥
पितृपि नाम ह पु पि ता म ह पि एते भगः पुष्प सिधा
सम् ॥ यथा चरय पुष्पः ॥ अतिष्ठितन का दिनो दि के स्व
र ना श्री य पुष्प नमः ल व को था रु य ॥ सुप्रोक्ष मस
दिधौ न दा श्रु नं अ श्रु वि ह्नी खी नि प दा नि चः ॥ एवं चा यः पु
सि स्य त् दि धौ पा य ए वा पु यः ॥ अपा म व्ये स्थि त दे वाः सु व म
पु पु ति स्मि त् ॥ वा स्मि त् करे नि तं सि वा आ पो य नं न

सि वा आ पं सं तः अथ सं क स्मा तं ल व वि श्रु ॥ सन्मः नि
अ दे व या तं स्वा विं यः ॥ ल थ मी व स ति पु ष्प पु ल द मीः
व स ति पु ष्क रे ॥ च न्द्रा मृ ते स दा गे षु सो म न स्य
द दा तु मे ॥ अ वा त वा सु मे पु ए य सा ति पु पि क र सु मेः
अ अ ह्य स्म र लो के त त द सु स दा म म ॥ वि श्वे षा दे
वा नां वै श्वान रु दे वा नां द तं म न प्र द क म धां शु म सु ॥

अपसव्यं ॥ पितृपितामहं ॥ पुत्रिपितामहं नादकमधं
 अमसु ॥ सव्यं ॥ गणधरस्पदतमं नमो मुदकमधायाम
 सु ॥ अतिथिं सनकादिभ्यो नमिंके श्वराचार्यो भ्यादतमं
 नमो मुदकमधीर्थे मसु ॥ अपसव्यं ॥ धीयां मे ध्यातेषां अ
 हो ॥ रात्रां स्मृतं पितरसंतः सव्यं ॥ अस्मत् ॥ गोब्रजी
 वं द्वितां संवद्वितां आपुराणो गये मे व्यर्थं न न च न लक्षमि

कुर्यादिति तां

संपतिसंतां न वृद्धीरस्तु ॥ मं एतलसलषधाराहायकं ॥
 दातासे नैविवद्वंतावेदं ॥ सततिस्वयं ॥ अस्मा
 भद्रा न नै मये गमतव हृदये च नो स्तु मे ॥ अ न च
 नैव ह भवेदिति थी अं ल मे महि ॥ याचि तास्ते न
 संतु आशाः ॥ विष्णु कथं च न ॥ यतं देवा सि षण् संतु मा
 याचि षण् कथं च न ॥ विपद अंतु षण् दा नां तांति न वं
 ॥ पुष्टि भवंतु ॥ रता रवा सत्ता सि षण् संतु ॥ अपसव्यं ॥

स्वाहा वाचयिष्ये वाचां॥ स्वाहा वाचयिष्ये वा
चां॥ प्रियतां ते भ्यः स्वाहा असु स्वाहा॥ अर्धो वा
जाको पलासं तु यातो के॥ पितृ पितामहं प्रपितां ह
पितां पात्रीं दुर्गाद्यैः पितृ सु स्वाहा॥ पितृ पितामहं प्रपि
तां ह पितां ह स्तोत्रं प्रथमं पितृ सु स्वाहा॥ श्री रो
कं गं गो दुर्गा॥ अर्धो प्रयः॥ लक्ष्मण यथं स्वये॥ दक्षीणा वि
यं के॥ सन्म॥ अर्धो लक्ष्मण सत्तु

अपसु मनसल कप्रोहित वि यं के पितां सतो न के॥
स्वस्ति वृत्रं तु मे वृतां॥ स्वस्ति॥ पितां सतो के॥ सन्म वि
अनस्त अर्धो वि यं॥ अग्नि प्रोषा वि श्रेष्ठा देवा नां वै श्व
रा र देवा नां स्वस्ति वृत्रं तु मे वृतां स्वस्ति॥ ततो गवा र्चनं॥ क पि
तां पि पंच गो मातु के॥ अर्धो वृत्रा राया प्रभू मातु के भ्यः
गणपती स्वस्थानं क्षत्र पाल व हि क्षीरा गतो भ्य ईद मास

नं नमः ॥ पुष्प ॥ लक्ष्मि किं गोतलने ॥ कपिलादि पंचगोमा
तु के भो वल्लभ एया मृमातु के भः ॥ गणपति स्तुत्या नक्ष
त्रपाल वरिहर्षी रं गरो भः ॥ पादार्घ्यं ॥ हस्तायः ॥ चमन विष्णु
रयः शो पविर्तंक पुष्पं नमः ॥ नमः यै नमः ॥ भजायै नमः ॥ सुभ
दायै नमः ॥ सुसिलायै नमः ॥ सुमनसे नमः ॥ गगनात् के भो
नमः ॥ पंचगोमातु के भो नमः ॥ बुद्ध्या एतः माहेश्वर्यै नमः ॥
कौमायै नमः ॥ वैष्णवे नमः ॥ राहिनमः ॥ इन्द्रा नि नमः ॥ चामुण्ड
यै नमः ॥

माहात्म्यमी नमः ॥ गणपति ये नमः ॥ विष्णवे श्वराय
नमः ॥ एकपंताय नमः ॥ लंवी दराय नमः ॥ पर्सु हस्ताय
नमः ॥ मुष्प हस्ताय नमः ॥ स्तुत्या नक्षत्रपालाय वरिहर्षी
रं गरो भो नमः ॥ धूपं दिपं नमः ॥ भद्रं गंधी दिः ॥ मण्डल
दयके ॥ स्तोत्रः ॥ गवे नमः स्तो २ ॥ वंदिता सिव सिषे नानि
ध्यामि जे रावहि नां कपिले हर मे पां पं जन्म या दुःकृतं कृ
तं

गावो ममा गतो लोका गावः पृथुतु देहि मेः॥ गावो मे हृदय चापि
गवामधो वसाम्यहं॥ सौर नेयि न गमो देवानां मम मूलपु
दं॥ ईदं गासंग हा एतं वृत मे वृत मृतमं॥ आयु देहि
धनं देहि पुत्रां देहि तथैव च॥ पशु पुष्टिताश्च यं दे
हि भोग्यं देहि गवे नमः॥ सर्वमंगलं मा गल्ये सिवे सर्वो
र्थ साधिके सर एये श्रीविके गो री नारयणि नमो स्तुते॥ गारा
नां गरा पति चैवः गजवः कुत्रिलोचनं॥ प्रसन्नं भुवं नै निर्यं वर
दाता विनायकम्॥ ईषु देवा नमस्तुभ्य कुल देव नमो नमो॥

ब्रह्मा न देव गाराः सर्वेषु नाग कु नमो स्तुते॥ नमस्तु नता य सरु
भ्रात्री सिवं सिकर सांतं॥ वाक्प॥ कपिलादि पंच गो मात कं असा
सर्वं पेरि पूर्ण मस्तु॥ दक्षी रणा दायः॥ गवे येतत् यथा सर्वो दक्षी रणां सतु
व्यामहं संप्रदयेः॥ मंदल यागु स्वाका था कु यः॥ गो वर पुंसा दो
भवंतु॥ सादि था य॥ पीत ना गो मया देव कृत सर्वो थ सा धनः॥
अस्पृय गस्प कर्तारं भोक्तारं पर मेधरं॥ मोर्तु गउ साक्षि ने अर्चं नमः॥
पुष्पं नमः॥ अभी से ल वि यः॥ गवा चं न सिद्धे थै भवि से ल स मुह तं मस्तु॥

यदिहसिमहाभागासर्वतिथामहाबलाबहुलास्पकरेनीत्यंतोयं
 सिरसिधारयत्॥ वंदनविषयः॥ पुद्गलकचवित्रेति॥ स्वर्गो न विषयः॥ ॐ
 पुष्पिकाप्रोतिः॥ स्वाज्ञो न आसिर्दीर्घा॥ आयुर्वलं विपुलं मसुः सुखश्रियो
 रसुभारो मय कामवसुधातव किर्तिरसु॥ श्रीरसुधर्ममतिरसु रिपु
 धा योसुसंतानवृद्धिमनोवाकिततसिद्धिरसु॥ सिद्धिरसु किं धारं भे
 वृषिरसुधनागमे॥ पुष्पिरसुसरिरेषसातिरसुगुरुतव सर्वविघ्न
 प्रसमनसर्वसाक्षिकरं ॐ भो॥ ॐ पुत्रं ये कामवत्पुमिसत्तानविजुर्न
 "सुसिं सर्वस्वाधवादिनासवदाकल्याणमसु॥ निवेदेवादिगोवरप्रसादो
 भवंतः॥ मिरुयास्तोत्रयाथा॥

पितापितामहश्चैवतथैवपुपितामहाः॥ तृप्तिप्रयातु विरुते नमो या
 दंतै न नृतले॥ मातामहा तृप्तिमयेति तस्यापितायस्यपिताच
 यन्मा॥ विश्वे च देवाः परमाः प्रयातु तृप्तिवीकास्यतु च यादधा
 ना॥ यज्ञेश्वरो ह्यसमस्तकर्ता भोलाह्य आत्मा हर ईश्वरो यंत
 संनिधान॥ कृष्णपयातिसर्वैरक्षाणि सेवाहसुरारिणो रं॥ मन्त्र
 हि नं कृयाहि नं भक्तिहि नं तथैव च॥ तदस्तु सर्वं संपूर्णं नमः
 मस्तु पितृदेवतां॥ पितर एव सर्वज्ञेया रुद्रश्चैव पितामहा॥
 पुपितामहास्तथादिवा इत्यते नैषिकास्मृता॥ कास्य पजो वधि

वरुदे ससोवही कश्चा जे पितृ पितामह प्रपितामह ॥ पिराउ पा
 नार्चन विधे तसु वी परिपुण्य मस्तु सखा ॥ अत्र गंधादि ॥ वृक्ष
 लोक विष्णु लोक रुद्र लोक संप्राप्तिरस्तु ॥ किं गोपने के ॥
 अनियाया सये न निस्वाद्य ॥ विश्वे भो देवो भो वैश्वानर देवो
 गोतिपुत्र नमः ॥ अप सखा पितृ पदोभ्यः पितृ पितामह प्रपितामह
 अप गोतिपुत्रा स्वधा ॥ यथे सकल आर्ति विधा ॥ गजमानं अप सखा
 पिराउ सकंतने ॥ पिराउ उथा पया नि ॥ वाह्य गंधाद्य ॥ पिराउ उथा
 पय सखा ॥ पवित्र कुसुम को मुद्रा प्रसन्न स्था नया ये ॥ ॐ पितृ पितामह
 प्रपितामह पिराउ स्वस्थान वा सो भवंतु ॥ सये न किं जातं के ॥

ॐ विश्वे देवा अभिगं मतां ॥ ॥ अप सये न ॥ ॐ पितृ पितामह
 प्रपितामह अभिगं मतां ॥ ॐ गदाधरय भर्थाति नंदि
 के अराचा श्रीं अभिगं मतां ॥ गवे अथान वा सो भवंतु ॥ पिराउ उथा
 ॐ सवत न्यायादु संरुण्य मुद्राः कालं गरे गिरा ॥ चक्रं वाः सरदी पेह
 साससी मानसे ॥ तं पित्रा ताः कुरु क्षत्रे वृक्षराणां वेद पार गां ॥
 प्रस्थितां दुरमधात मुयते अभिप्रसिद्धतां ॥ गया मा पितरूपेण स्वयमे
 व्यो न नाद नः ॥ लघु धातु दुरी काक्षं मुच्यतेः सररा वयं समिपं नृप
 मानेण पिराउ दया गया सिरे ॥ ठदुरे सपुत्रोः वारण कल मे को नरं स
 तफलं मुती ये नले स्त्री वा चा लं देव गदाधर आत्मा नं नारयिष्य